|  |
| --- |
| 23. Juli  |
| **Heiliger Liborius Hochfest** |
| Erste Lesung: Jes 52,7-10; Zweite Lesung: 1 Tim 6,13-16; Evangelium: Lk 22,24-30  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 840 | Sei gegrüßet, o Libori |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 172 | Gott in der Höh |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 1, 1-6 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 31, 1 | Selig der Mensch |
|  | oder |  |
|  | GL 543, 1+3 | Wohl denen, die da wandeln |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 8 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Geht zu allen Völkern,* |
|  | *und macht alle Menschen zu meinen Jüngern.* |
|  | *Ich bin bei euch alle Tage bis zum Ende der Welt.* |
|  | **oder** |
|  | *Der Herr hat mich gesandt,* |
|  | *den Armen die Frohe Botschaft zu bringen* |
|  | *und den Gefangenen die Freiheit zu verkünden.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 702 | Herr, was im Alten Bunde |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 380, 2+3 | Alles, was dich preisen kann |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 139 | Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 405, 1-3 | Nun danket alle Gott |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 833 | Zu dir schick ich mein Gebet |
|  | GL 841 | Großer Gott, in deinen Freunden |
|  | GL 842 | Du großer Hirt und Gottesmann |
|  |  |  |